महावीर युग, देश का स्वर्णयुग

(युवाचार्य श्री शिवमुनिजी महाराज)

अमावस्या की काली-अंधेरी रात कार्तिक की अमावस्या के दिन पूर्णिमा की रात्रि की तरह जग-मगा उठती है। सर्वत्र, ज्योति, दीपमालाएँ अपनी सौन्दर्य सृष्टि से नवआलोक का सृजन करती हैं? दीपों की कतारों की ज्योति के मध्य - "लक्ष्मी-पूजन" होता है। और एक नूतन वर्ष का आशाओं और आकांक्षाओं के साथ आलिंगन किया जाता है? इस महापर्व दीपावली का महत्व आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी बहुत अद्‌भुत है क्योंकि यह जैन धर्म के अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी का "निर्वाण दिवस" है। ईस्वी पूर्व ५२८ नवम्बर में कार्तिक अमावस्या के दिन भगवान् का पावापुरी (बिहार) में परिनिर्वाण हुआ था!

भगवान् महावीर जैन धर्म के २४ वें एवं अन्तिम तीर्थंकर थे। महावीर का जन्म ई.पू. ५९९ चैत्र सुदी त्रयोदशी को वैशाली के कुण्डलपुर में हुआ। आप जाति के क्षत्रिय थे। आपके पिता का नाम सिद्धार्थ तथा माता का नाम त्रिशला था! "वर्धमान" महावीर के बचपन का नाम था। परन्तु उनके अदम्य साहस, निर्भयता एवं कष्ट सहिष्णुता के कारण उनका नाम "महावीर" रखा गया।

जीवन के तीसवें वर्ष में महावीर ने राग से विराग की ओर अपने जीवन को बढ़ाया। साम्राज्य, राजमहल, सुन्दर पत्नी एवं पुत्री आदि को त्याग कर जीवन के महामार्ग अर्थात "साधना" की ओर कदम बढ़ाये!

साधक जीवन में महावीर ने बहुत ही कष्ट, दुःख, **परिषहों** को सहा, इस जीवन में उग्रतम एवं भयंकर तप करके आपने मोक्ष की प्राप्ति की। अज्ञात लोगों द्वारा आपको अनेक प्रकार के भयंकर त्रास दिये गये! आपके कानों में लोहे की तीक्ष्ण कीलें ठोक दी गई। भयंकरतम पीड़ा दी गई। परन्तु महावीर ने इन भीषणतम वेदनाओं को, पीड़ाओं को समता से सहन किया। उनका अन्तःकरण स्वयं के कष्टों में वज्र-सा कठोर था, तो पर पीड़ा देखकर नवनीत (मक्खन) की भांति पिघलने वाला भी था। गौशालक जैसे कष्ट देने वाले व्यक्तियों पर भी उन्होंने करुणा की वृष्टि की! उनकी अन्तश्चेतना में समता का अखण्ड दीप सदा प्रज्ज्वलित था!

महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त किया और अरिहंत बने। भगवान महावीर का तीर्थंकर काल भारत वर्ष में लोक शक्ति के अभ्युदय का काल है। जनता में आध्यात्मिक विकास का स्वर्णिम युग है। भगवान् महावीर के युग में यज्ञों में पशुओं की निर्मम आहुतियां दी जाती थी। स्त्रियाँ धार्मिक अध्ययन व अनुष्ठानों में भाग लेने से वंचित थीं। शूद्रों की स्थिति बहुत दयनीय थी, उनको समाज में नीची एवं हेय दृष्टि से देखा जाता था। शूद्रों के साथ अमानवीय कृत्य होते थे। इस सामाजिक विषमता के जहर के साथ ही शोषण, संग्रहखोरी एवं

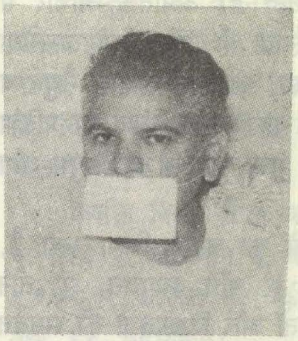

युवाचार्यश्री शिवमुनिजी

अमीरी-गरीबी का वर्चस्व भी था।

महावीर की प्रबुद्ध चेतना ने इन विषमताओं और सामाजिक अत्याचारों के विरुद्ध सिंहनाद किया। उन्होंने - "ज्ञान-शक्ति, तप-शक्ति, संघ शक्ति" तीनों ही शक्तियों द्वारा इन विषमताओं को मिटाने का अथक प्रयास किया। पशुहिंसा के विरोध में महावीर ने बड़े मार्मिक प्रवचन दिये। उनके प्रवचनों से ही प्रभावित होकर भारत के "दिग्गज कर्मकाण्डी ब्राह्मण विद्वान्, यज्ञमण्डपों के यज्ञ की आहुति प्रज्ज्वलित किये बिना ही उठ गये और महावीर के शिष्य बन कर समता और अहिंसा के प्रबल प्रचारक बन गये। इन विद्वानों में सबसे श्रेष्ठ विद्वान इन्द्रभूति गौतम थे। ये महावीर के प्रथम गणधर थे। जिन्होंने ४४०० शिष्यों के साथ एक ही दिन में दीक्षा ली। नारी उत्थान एवं स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अध्ययन, स्वाध्याय तथा धार्मिक अनुष्ठानों का अधिकार प्रदान करने में महावीर ने बड़ा साहसिक कदम उठाया। स्त्रियों को दीक्षित करके तो उन्होंने वैदिक विद्वानों को चकित कर दिया। उनके धर्म संघ में ३६ हजार साध्वियां और लगभग ३ लाख उपासिकाएँ थी।

भगवान् महावीर ने शूद्रों के धार्मिक अधिकारों का केवल समर्थन ही नहीं किया, किन्तु अपने कथन को क्रियात्मक रूप भी दिया। उनका कहना था, जो व्रत का आचरण करेगा, सदाचार के नियमों का पालन करेगा उसकी सद्गति अवश्य होगी। चाहे वह शूद्र हो या ब्राह्मण। शूद्र में भी वही आत्म चेतना है, जो ब्राह्मण में है। मनुष्य कर्म से ऊँचा उठता है, जन्म या जाति से नहीं। भगवान महावीर ने अनेक शूद्रों को अपना शिष्य बनाया उनमें से कई तो बड़े ही तपस्वी हुए, जैसे हत्यारा अर्जुन माली, तस्कर रोहिणेय, श्वपाक जाति में जन्मे हरिकेशी आदि।

महावीर के सिद्धान्त महान् थे। अहिंसा और अपरिग्रह की पावन विचारधारा के साथ ही जगत् के वैचारिक कलहों का शमन करने के लिये भगवान् महावीर ने 'अनेकान्तवाद' का सिद्धान्त बताया। उन्होंने, कहा - "सत्य के जिज्ञासु के लिये पहला नियम है, कि वह अनाग्रही बने।" किसी भी धर्म व विचार पर आक्षेप न करे, उनका अनादर न करे। किन्तु विवेक तथा धैर्य के साथ वस्तु के सभी पहलुओं का चिन्तनकर सत्य का निर्णय करे।

(शेष भाग पृष्ठ ३३ पर)

ऐसी वृत्ति नहीं भली, होत स्वयं को क्लेश ।
जयन्तसेन अवर मनुज, करे कभी ना द्वेष ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org